Subject → PSYCHOLOGY

Semester → I

Course code → III

Topic Code →. Interview meet

By Dr Sanjay Kumar
Dept. of Psychology
Maharaja College, Ara
Mob. No» 9431878041
Email → Sanjay.Dehuri@gmail.com

Scanned with CamScanner

Q What do you mean by Interview method? Describe its merits and demerits.

Ans: → शैक्षिक कार्यों में साक्षात्कार प्रविधि का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि जब समस्या आती है तो व्यक्ति की भावनाएँ, मनोवृत्तियाँ, प्रवृत्तियाँ और का अध्ययन किस प्रकार किया जाए। तो देखा गया कि साक्षात्कार विधि ही एक मात्र विधि थी कि इन सारे समस्याओं का समाधान हो सकता है। इस विधि का मुख्य विशेषता है कि इसमें अनुसंधानकर्ता और सूचनादाता एक दूसरे के आमने सामने संबंध स्थापित कर वार्तालाप करके मनुष्य की भावनाओं एवं मनोवृत्तियों का क्रमबद्ध अध्ययन कर सकता है। इस विधि के प्रयोग से सामाजिक विज्ञानों का अनुसंधानों में ही संभव है। क्योंकि सामाजिक अनुसंधानों का संबंध जीवित वस्तुओं से होता है। इस प्रकार इसके परिभाषा के संबंध में P.V. Young का कहना है कि

"The Interview may be regarded as a systematic method by which one person enters more or less imaginatively into the inner life of another who is generally a comparative stranger to him." ठीक इसी प्रकार V.M Palmer का कहना है कि

"The Interview constitues a social situation between two persons. The social process involved requiring both individual matually respond though the social research purpose of the interview calls ~~forth~~ for a very different response from the two parties concerned."

इन परिभाषाओं को देखने के बाद हम कह सकते हैं कि साक्षात्कार व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा सूचना एकत्रित करने एवं उन्हें लिखने की एक ऐसी क्रमबद्ध प्रविधि है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर परस्पर आमने सामने होकर बातचीत संवाद या उत्तर प्रतिउत्तर करते हैं।

इस विधि के महत्व या गुण को निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं।

(1) सभी प्रकार के सूचनाओं का संकलन :-

इस विधि का मुख्य गुण यह है कि इस विधि द्वारा प्रायः सभी प्रकार के सूचनाओं का सीधे रूप से संबंधित व्यक्तियों से संकलन संभव होता है। जैसे शैक्षिक सूचना प्राप्त करना हो तो शिक्षा विभाग के व्यक्तियों से साक्षात्कार किया जा सकता है।

(2) अमूर्त एवं अदृश्य घटनाओं का अध्ययन :-

इसका दूसरा गुण यह है कि इस विधि द्वारा अनेकों घटनाओं का भी अध्ययन संभव है। जैसे :- व्यक्तिगत धारणाएँ, भावनाएँ, संवेगों, विचार, आदि ऐसी अनेक अमूर्त घटनाएँ हैं। जो कि हमारी क्रियाओं का संचालन एवं निर्धारण करती है। साक्षात्कार विधि द्वारा साक्षात्कार दाता से सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती है।

Scanned with CamScanner

(3) भूतकालीन घटनाओं का अध्ययन :→

साक्षात्कार विधि द्वारा भूतकालीन घटनाओं एवं उनके प्रभावों का भी अध्ययन किया जा सकता है। क्योंकि मानव जीवन में इस प्रकार की अनेक घटनाएँ एवं परिस्थितियाँ होती हैं जो कि काफी समय पूर्व ही घट चुकी होती हैं। और उनकी पुनरावृत्ति संभव नहीं होती है। परन्तु सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण अध्ययनों के लिए उन घटनाओं का अध्ययन आवश्यक हो, सकता है। तो ऐसी परिस्थिति में साक्षात्कार विधि ही एक मात्र विकल्प बच जाता है।

(4) पर्याप्त मनोवैज्ञानिक अध्ययन :→

हम जानते हैं कि व्यक्ति की अनेक धारणाएँ होती हैं विचार एवं उद्देश्य होते हैं जिनका आसानी से ~~संभव नहीं है।~~ अध्ययन संभव नहीं है। परन्तु साक्षात्कार विधि द्वारा मनोवैज्ञानिक रीति से इन सबका अध्ययन अच्छी प्रकार से हो जाता है। साक्षात्कार करते समय साक्षात्कार कर्ता साक्षात्कार दाता के मानसिक भावों के उतार-चढ़ाव का भी अध्ययन करता है। साथ ही अनेक मनोवैज्ञानिक प्रश्न पूछकर उनके दिल की बात जिसे कि वे नहीं बताना चाहते हैं उसे निकालने का भरसक प्रयास करता है और काफी सीमा तक सफल भी हो जाता है।

(5) पारस्परिक प्रेरणात्मक अध्ययन :→

इस विधि में कम से कम दो व्यक्ति तो अवश्य होते हैं। इन दोनों के विचारों का आपस में

Scanned with CamScanner

आदान प्रदान होता रहता है। ये दोनों एक दूसरे से प्रेरित एवं उत्साहित होती रहती है। परस्पर प्रेरणा से मिलने के कारण एक दूसरे के मन की बात जल्द प्रकट हो जाती है। परस्पर बातचीत से संबंधित विषय के नवीन पहलू सामने आते है जो कि अध्ययनों को एक नया मोड़ प्रदान करते है।

(6) सूचनाओं का सत्यापन संभव :→

इस विधि द्वारा प्राप्त सूचनाओं का सत्यापन संभव होता है। इसका मुख्य कारण है कि आपसी विचारों का स्वतंत्रता पूर्वक स्पष्टीकरण किया जाता है। क्योंकि प्रश्नों का उत्तर संक्षिप्त नहीं होता है। इसलिए प्राप्त सामग्री अधिक विश्वसनीय होती है।

दोष :→

इस विधि में अधिक गुण होते हुए भी अन्य विधि की भाँति इसमें अनेक दोष देखने को मिलता है जो निम्नलिखित है :-

(1) व्यक्तिगत पक्षपात :→

इस विधि का मुख्य दोष यह है कि इस विधि द्वारा व्यक्तिगत पक्षपात का समावेश होने की अधिक संभावना होती है। इस लिए सामग्री की विश्वसनीयता बराबर संदिग्ध रहती है। सूचनादाता तो अपने भाव एवं पक्षपात मिश्रित सूचना प्रदान करता है।

(2) साक्षात्कारदाता पर निर्भरता :→

इस विधि में हमें साक्षात्कारदाता पर पूर्णरूप से निर्भर होना पड़ता है। इसमें तो पहली बात यह है कि साक्षात्कारदाता को साक्षात्कार के लिए राजी करना। यदि साक्षात्कारदाता साक्षात्कार के लिए राजी हो भी जाती है तो स्वतंत्र उत्तर कोई ही पसंद करता है। यदि किसी से प्रेम विवाह आदि के बारे में पूछा जाए तो वह बताने में इन्कार कर सकता है। इसलिए इस विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारदाता के ऊपर निर्भर होना पड़ता है।

(3) स्मरण शक्ति पर निर्भरता :→

इस विधि का एक दोष यह भी है कि इस विधि में पूर्ण रूप से साक्षात्कारकर्ता को अपनी स्मरण शक्ति पर निर्भर होना पड़ता है क्योंकि साक्षात्कार लेते समय साक्षात्कारकर्ता इस स्थिति में नहीं होता है कि वह सभी सूचनाओं को नोट कर सके। वह साक्षात्कार समाप्त करने के बाद सूचनाओं को लिखता है। परन्तु इस समय अनेक बातों को भूल भी जाता है और गलत भी नोट कर लेता है जो निष्कर्ष में त्रुटि पैदा कर सकते हैं।

(4) हीन भावना :→

इस विधि का दोष है कि साक्षात्कार विधि में साक्षात्कारकर्ता में अक्सर हीन भावना आ जाती है। क्योंकि साक्षात्कार के लिए अनेक व्यक्तियों के सामने जाना पड़ता है और इस प्रक्रिया

में व्यक्ति उससे तरह-तरह के व्यवहार करते हैं। इन व्यवहार के कारण अच्छे हीन भावना पनप जाती है। हीन भावना का असर सूचना संकलन पर पड़ता है। अनेक सूचनाओं का संकलन छोड़ देता है क्योंकि अध्ययन के लिए हानिकारक होता है।

(5) अशुद्धि रिपोर्ट :→ इस विधि का दोष है कि इसके अनेक प्रकार का पक्षपात भावनाओं व्यक्तिगत विचारों के सम्मिलित होने के कारण साक्षात्कारकर्ता द्वारा लिखी गई रिपोर्ट में अशुद्धि की मात्रा अत्यधिक होती है।

(6) कुशल साक्षात्कारकर्ता की समस्या :→

साक्षात्कार विधि के लिए कुशल साक्षात्कारकर्ता की आवश्यकता होती है। साक्षात्कारकर्ता की उच्चतम योग्यता होनी चाहिए। साथ ही मनोवैज्ञानिक भी होना चाहिए। इन सब गुणों के होने पर ही साक्षात्कार में सफल हो सकता है। अगर ऐसा नहीं होता है तो साक्षात्कार सफल नहीं होता है।

(7) अत्यधिक समय की आवश्यकता :→

इस विधि का सबसे बड़ा दोष है कि इस विधि में अधिक समय की आवश्यकता होती है। साक्षात्कारकर्ता को अनेक व्यक्तियों से साक्षात्कार करना पड़ता है। साक्षात्कार दाता के

Scanned with CamScanner

पास बहुत बार जाना पड़ता है और साक्षात्कारदाता अपनी अनावश्यक बातें करने में अधिक समय बर्बाद कर देता है। इस प्रकार विधि में अधिक समय नष्ट करना पड़ता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक वस्तु में कुछ गुण के साथ साथ अवगुण भी पाए जाते हैं। जो कि उसके महत्व को घटाती ही है। क्योंकि जिसमें कमी होगी उसी में विकास एवं सुधार होगा। इस प्रकार इस विधि में धीरे धीरे विकास हो रहा है। और धीरे धीरे सामाजिक अनुसंधान की अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रणाली के रूप में स्वीकृति मिलती जा रही है।

Scanned with CamScanner